

سُورَةُ الزُّمَرِ

Surah 39 — Az-Zumar (The Groups) · Meccan · 75 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

(इस) किताब (कुरान) का नाज़िल करना उस खुदा की बारगाह से है जो (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है

2

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ

(ऐ रसूल) हमने किताब (कुरान) को बिल्कुल ठीक नाज़िल किया है तो तुम इबादत को उसी के लिए निरा खुरा करके खुदा की बन्दगी किया करो

3

أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ كَفَّارٌ ۚ

आगाह रहो कि इबादत तो खास खुदा ही के लिए है और जिन लोगों ने खुदा के सिवा (औरों को अपना) सरपरस्त बना रखा है और कहते हैं कि हम तो उनकी परसतिश सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ये लोग खुदा की बारगाह में हमारा तकरब बढ़ा देंगे इसमें शक नहीं कि जिस बात में ये लोग झगड़ते हैं (क़यामत के दिन) खुदा उनके दरमियान इसमें फैसला कर देगा बेशक खुदा झूठे नाशुके को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

4

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۖ لَأَصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

अगर खुदा किसी को (अपना) बेटा बनाना चाहता तो अपने मखलूक़ात में से जिसे चाहता मुन्तख़िब कर लेता (मगर) वह तो उससे पाक व पाकीज़ा है वह तो यकता बड़ा ज़बरदस्त अल्लाह है

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى
 اللَّيْلِ ۚ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ
 الْغَفُورُ

उसी ने सारे आसमान और ज़मीन को बजा (दुरुस्त) पैदा किया वही रात को दिन पर ऊपर तले लपेटता है और वही दिन को रात पर तह ब तह लपेटता है और उसी ने आफताब और महताब को अपने बस में कर लिया है कि ये सबके सब अपने (अपने) मुकरर वक्त चलते रहेगें आगाह रहो कि वही ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ ۖ وَحِدَةٍ ۚ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَانزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَنِيَةَ
 أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا ۖ مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ ۚ فِي ظُلُمَاتٍ ۚ
 ثَلَاثٌ ۚ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآَنَىٰ تُصْرَفُونَ

उसी ने तुम सबको एक ही शख्स से पैदा किया फिर उस (की बाक़ी मिट्टी) से उसकी बीबी (हौव्वा) को पैदा किया और उसी ने तुम्हारे लिए आठ किस्म के चारपाए पैदा किए वही तुमको तुम्हारी माँओं के पेट में एक किस्म की पैदाइश के बाद दूसरी किस्म (नुत्फे जमा हुआ खून लोथड़ा) की पैदाइश से तेहरे तेहरे अंधेरों (पेट) रहम और झिल्ली में पैदा करता है वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसी की बादशाही है उसके सिवा माबूद नहीं तो तुम लोग कहाँ फिरे जाते हो

إِنْ تَكْفُرُوا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۚ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَإِنْ تَشْكُرُوا ۖ
 يَرْضَاهُ لَكُمْ ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ ۖ وَزِرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
 كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ ۖ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

अगर तुमने उसकी नाशुक्की की तो (याद रखो कि) खुदा तुमसे बिल्कुल बेपरवाह है और अपने बन्दों से कुफ़्र और नाशुक्की को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह उसको तुम्हारे वास्ते पसन्द करता है और (क़यामत में) कोई किसी (के गुनाह) का बोझ (अपनी गर्दन पर) नहीं उठाएगा फिर तुमको अपने परवरदिगार की तरफ लौटना है तो (दुनिया में) जो कुछ (भला बुरा) करते थे वह तुम्हें बता देगा वह यकीनन दिलों के राज़ (तक) से खूब वाक़िफ़ है

﴿ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ ۖ دَعَا رَبَّهُ ۖ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ ۖ نِعْمَةً ۖ مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوٓا۟ ۖ إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا ۖ لِّیُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۖ ﴾

और आदमी (की हालत तो ये है कि) जब उसको कोई तकलीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ रुजू करके अपने परवरदिगार से दुआ करता है (मगर) फिर जब खुदा अपनी तरफ से उसे नेअमत अता फ़रमा देता है तो जिस काम के लिए पहले उससे दुआ करता था उसे भुला देता है और बल्कि खुदा का शरीक बनाने लगता है ताकि (उस ज़रिए से और लोगों को भी) उसकी राह से गुमराह कर दे (ऐ रसूल ऐसे शख्स से) कह दो कि थोड़े दिनों और अपने कुफ़्र (की हालत) में चैन कर लो

أَمَّنْ هُوَ قُنْتُ عَانَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا ۖ وَقَائِمًا ۖ يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا ۖ رَحْمَةً رَبِّهِ ۖ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۖ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُو۟لُوا۟ الْأَلْبَابِ ۖ

(आखिर) तू यकीनी जहन्नुमियों में होगा क्या जो शख्स रात के अवकात में सजदा करके और खड़े-खड़े (खुदा की) इबादत करता हो और आखेरत से डरता हो अपने परवरदिगार की रहमत का उम्मीदवार हो (नाशुक्के) काफिर के बराबर हो सकता है (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि भला कहीं जानने वाले और न जाननेवाले लोग बराबर हो सकते हैं (मगर) नसीहत इबरतें तो बस अक्लमन्द ही लोग मानते हैं

قُلْ يُعْبَادِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ اتَّقُوا ۖ رَبَّكُمْ ۖ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا ۖ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۖ ۚ وَأَرْضُ اللَّهِ وَسِعَةٌ ۖ ۚ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे ईमानदार बन्दों अपने परवरदिगार (ही) से डरते रहो (क्योंकि) जिन लोगों ने इस दुनिया में नेकी की उन्हीं के लिए (आखेरत में) भलाई है और खुदा की ज़मीन तो कुशादा है (जहाँ इबादत न कर सको उसे छोड़ दो) सब्र करने वालों ही की तो उनका भरपूर बेहिसाब बदला दिया जाएगा

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا ۖ لَهُ الدِّينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं इबादत को उसके लिए खास करके खुदा ही की बन्दगी करो

12

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ

और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहल मुसलमान हूँ

13

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़ी (सख्त) दिन (क़यामत) के अज़ाब से डरता हूँ

14

قُلِ اللَّهُ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं अपनी इबादत को उसी के वास्ते ख़ालिस करके खुदा ही की बन्दगी करता हूँ (अब रहे तुम) तो उसके सिवा जिसको चाहो पूजो

15

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि फिल हकीकत घाटे में वही लोग हैं जिन्होंने अपना और अपने लड़के वालों का क़यामत के दिन घाटा किया आगाह रहो कि सरीही (खुल्लम खुल्ला) घाटा यही है कि उनके लिए उनके ऊपर से आग ही के ओढ़ने होंगे

16

لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ ۚ مِنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهَ بِهِ ۚ عِبَادَهُ ۚ ۚ يُعْبَادُ فَاتَّقُونَ

और उनके नीचे भी (आग ही के) बिछौने ये वह अज़ाब है जिससे खुदा अपने बन्दों को डराता है तो ऐ मेरे बन्दों मुझी से डरते रहो

17

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطُّغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا ۚ إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادَ

और जो लोग बुतों से उनके पूजने से बचे रहे और खुदा ही की तरफ रूजु की उनके लिए (जन्नत की) खुशख़बरी है

18

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُو۟لَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَىٰ اللَّهُ ۖ وَآو۟لَٰئِكَ هُمۡ أُو۟لُوا۟ الْأَلْبَابِ

तो (ऐ रसूल) तुम मेरे (खास) बन्दों को खुशखबरी दे दो जो बात को जी लगाकर सुनते हैं और फिर उसमें से अच्छी बात पर अमल करते हैं यही वह लोग हैं जिनकी खुदा ने हिदायत की और यही लोग अक्लमन्द हैं

19

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ

तो (ऐ रसूल) भला जिस शख्स पर अज़ाब का वायदा पूरा हो चुका हो तो क्या तुम उस शख्स की खलासी दे सकते हो

20

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنۢ فَوْقَهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعَدَ اللَّهُ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ

जो आग में (पड़ा) हो मगर जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे उनके ऊँचे-ऊँचे महल हैं (और) बाला खानों पर बालाखाने बने हुए हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं ये खुदा का वायदा है (और) वायदा खिलाफी नहीं किया करता

21

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَسَلَكَهُۥ يَنْبِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مَّخْتَلِفًا أَلْوَنُهُۥ ثُمَّ يَهِيَجُ فَنُفْرَهُۥ مُصْفَرًّا ۖ ثُمَّ يَجْعَلُهُۥ حُطَمًا ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرًا لِّأُو۟لِي الْأَلْبَابِ

क्या तुमने इस पर गौर नहीं किया कि खुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन में चश्में बनाकर जारी किया फिर उसके ज़रिए से रंग बिरंग (के गल्ले) की खेती उगाता है फिर (पकने के बाद) सूख जाती है तो तुम को वह ज़र्द दिखायी देती है फिर खुदा उसे चूर-चूर भूसा कर देता है बेशक इसमें अक्लमन्दों के लिए (बड़ी) इब्रत व नसीहत है

22

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّنۢ رَبِّهِۖ ۚ فَوَيْلٌۭ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّنۢ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ أُو۟لَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

तो क्या वह शख्स जिस के सीने को खुदा ने (कुबूल) इस्लाम के लिए कुशादा कर दिया है तो वह अपने परवरदिगार (की हिदायत) की रौशनी पर (चलता) है मगर गुमराहों के बराबर हो सकता है अफसोस तो उन लोगों पर है जिनके दिल खुदा की याद से (गाफ़िल होकर) सख्त हो गए हैं

اللَّهُ نَزَلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا ۖ مُتَشَبَّهًُا ۚ مَثَانِي تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ

ये लोग सरीही गुमराही में (पड़े) हैं खुदा ने बहुत ही अच्छा कलाम (यावी ये) किताब नाज़िल फरमाई (जिसकी आयतें) एक दूसरे से मिलती जुलती हैं और (एक बात कई-कई बार) दोहराई गयी है उसके सुनने से उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने परवरदिगार से डरते हैं फिर उनके जिस्म नरम हो जाते हैं और उनके दिल खुदा की याद की तरफ बा इतमेनान मुतावज्जे हो जाते हैं ये खुदा की हिदायत है इसी से जिसकी चाहता है हिदायत करता है और खुदा जिसको गुमराही में छोड़ दे तो उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं

أَفَمَنْ يَتَّقِي بِوَجْهِهِ ۚ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ نُوفُوا ۚ مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ

तो क्या जो शख्स कयामत के दिन अपने मुँह को बड़े अज़ाब की सिपर बनाएगा (नाज़ी के बराबर हो सकता है) और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि तुम (दुनिया में) जैसा कुछ करते थे अब उसके मज़े चखो

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَتْهُمْ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ

जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया तो उन पर अज़ाब इस तरह आ पहुँचा कि उन्हें ख़बर भी न हुई

فَآذَقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

तो खुदा ने उन्हें (इसी) दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई की लज्जत चखा दी और आख़ेरत का अज़ाब तो यक़ीनी उससे कहीं बढ़कर है काश ये लोग ये बात जानते

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

और हमने तो इस कुरान में लोगों के (समझाने के) वास्ते हर तरह की मिसाल बयान कर दी है ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें

قُرْءَانًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ ۚ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

(हम ने तो साफ और सलीस) एक अरबी कुरान (नाज़िल किया) जिसमें ज़रा भी कजी (पेचीदगी) नहीं

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ رَجُلًا ۖ فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَكِّسُونَ وَرَجُلًا ۖ سَلَمًا ۖ لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

ताकि ये लोग (समझकर) खुदा से डरे खुदा ने एक मिसाल बयान की है कि एक शख्स (गुलाम) है जिसमें कई झगड़ालू साझी हैं और एक ज़ालिम है कि पूरा एक शख्स का है उन दोनों की हालत यकसाँ हो सकती हैं (हरगिज़ नहीं) अल्हमदोलिल्लाह मगर उनमें अक्सर इतना भी नहीं जानते

إِنَّكَ مَيِّتٌ ۚ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ

(ऐ रसूल) बेशक तुम भी मरने वाले हो

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ

और ये लोग भी यकीनन मरने वाले हैं फिर तुम लोग क़यामत के दिन अपने परवरदिगार की बारगाह में बाहम झगड़ोगे

ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ

तो इससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो खुदा पर झूठ (तूफान) बाँधे और जब उसके पास सच्ची बात आए तो उसको झुठला दे क्या जहन्नुम में काफिरों का ठिकाना नहीं है

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۚ أُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

(ज़रूर है) और याद रखो कि जो शख्स (रसूल) सच्ची बात लेकर आया वह और जिसने उसकी तसदीक की यही लोग तो परहेज़गार हैं

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ

ये लोग जो चाहेंगे उनके लिए परवर दिगार के पास (मौजूद) है, ये नेकी करने वालों की जज़ाए खैर है

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا ۚ وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

ताकि खुदा उन लोगों की बुराइयों को जो उन्होंने की हैं दूर कर दे और उनके अच्छे कामों के एवज़ जो वह कर चुके थे उसका अज़्र (सवाब) अता फरमाए

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۚ ۚ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۚ

क्या खुदा अपने बन्दों (की मदद) के लिए काफ़ी नहीं है (ज़रूर है) और (ऐ रसूल) तुमको लोग खुदा के सिवा (दूसरे माबूदों) से डराते हैं और खुदा जिसे गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई राह पर लाने वाला नहीं है

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۚ ۚ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۚ

और जिस शख्स की हिदायत करे तो उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या खुदा ज़बरदस्त और बदला लेने वाला नहीं है (ज़रूर है)

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ ۚ ۚ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ۚ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ

और (ऐ रसूल) अगर तुम इनसे पूछो कि सारे आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया तो ये लोग यकीनन कहेंगे कि खुदा ने, तुम कह दो कि तो क्या तुमने ग़ौर किया है कि खुदा को छोड़ कर जिन लोगों की तुम इबादत करते हो अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ पहुँचाना चाहे तो क्या वह लोग उसके नुक़सान को (मुझसे) रोक सकते हैं या अगर खुदा मुझ पर मेहरबानी करना चाहे तो क्या वह लोग उसकी मेहरबानी रोक सकते हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि खुदा मेरे लिए काफ़ी है उसी पर भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं

قُلْ يَقَوْمِ اَعْمَلُوا ۚ عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ اِنِّى عَمِلٌ ۙ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरी कौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) अमल किए जाओ मै

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ ۙ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ ۙ مُّقِيمٌ

भी (अपनी जगह) कुछ कर रहा हूँ, फिर अनकरीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह आफत आती है जो उसको (दुनिया में) रूसवा कर देगी और (आखिर में) उस पर दायमी अज़ाब भी नाज़िल होगा

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۚ ۚ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ

(ऐ रसूल) हमने तुम्हारे पास (ये) किताब (कुरान) सच्चाई के साथ लोगों (की हिदायत) के वास्ते नाज़िल की है, पस जो राह पर आया तो अपने ही (भले के) लिए और जो गुमराह हुआ तो उसकी गुमराही का वबाल भी उसी पर है और फिर तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार तो हो नहीं

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۚ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

खुदा ही लोगों के मरने के वक्त उनकी रूहें (अपनी तरफ़) खींच बुलाता है और जो लोग नहीं मरे (उनकी रूहें) उनकी नींद में (खींच ली जाती हैं) बस जिन के बारे में खुदा मौत का हुक्म दे चुका है उनकी रूहों को रोक रखता है और बाक़ी (सोने वालों की रूहों) को फिर एक मुक़रर वक्त तक के वास्ते भेज देता है जो लोग (ग़ौर) और फिक्र करते हैं उनके लिए (कुदरते खुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं

أَمْ اتَّخَذُوا ۙ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أُولَٰئِكَ كَانُوا ۙ لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا ۙ وَلَا يَعْقِلُونَ

क्या उन लोगों ने खुदा के सिवा (दूसरे) सिफारिशी बना रखे हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगरचे वह लोग न कुछ एख़तेयार रखते हों न कुछ समझते हों

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَعَةُ جَمِيعًا ۚ لَهُ ۚ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

(तो भी सिफारशी बनाओगे) तुम कह दो कि सारी सिफारिश तो खुदा के लिए खास है- सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत उसी के लिए खास है, फिर तुम लोगों को उसकी तरफ लौट कर जाना है

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآلَاءِ آخِرَةِ ۚ وَإِذَا ذُكِرَ
الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ

और जब सिर्फ अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो जो लोग आखेरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुतनफ़ि़र हो जाते हैं और जब खुदा के सिवा और (माबूदों) का जिक्र किया जाता है तो बस फौरन उनकी बाछें खिल जाती हैं

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي
مَا كَانُوا ۚ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ खुदा (ऐ) सारे आसमान और ज़मीन पैदा करने वाले, ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले हक़ बातों में तेरे बन्दे आपस में झगड़ रहे हैं तू ही उनके दरमियान फैसला कर देगा

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۚ وَمِثْلَهُ ۚ مَعَهُ ۚ لَأَفْتَدَوْا ۚ بِهِ ۚ مِنْ
سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا ۚ يَحْتَسِبُونَ

और अगर नाफरमानों के पास रूए ज़मीन की सारी काएनात मिल जाएंग बल्कि उनके साथ उतनी ही और भी हो तो क़यामत के दिन ये लोग यक़ीनन सख्त अज़ाब का फ़िदया दे निकलें (और अपना छुटकारा कराना चाहें) और (उस वक्त) उनके सामने खुदा की तरफ से वह बात पेश आएगी जिसका उन्हें वहम व गुमान भी न था

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا ۚ بِهِ ۚ يَسْتَهْزِءُونَ

और जो बदकिरदारियाँ उन लोगों ने की थीं (वह सब) उनके सामने खुल जाएँगी और जिस (अज़ाब) पर यह लोग कहकहे लगाते थे वह उन्हें घेरगा

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ ۖ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً ۖ مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ ۖ عَلَىٰ عِلْمٍ ۖ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ ۖ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

इन्सान को तो जब कोई बुराई छू गयी बस वह लगा हमसे दुआएँ माँगने, फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअमत अता करते हैं तो कहने लगता है कि ये तो सिर्फ़ (मेरे) इल्म के ज़ोर से मुझे दिया गया है (ये ग़लती है) बल्कि ये तो एक आज़माइश है मगर उन में के अक्सर नहीं जानते हैं

قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا ۖ يَكْسِبُونَ

जो लोग उनसे पहले थे वह भी ऐसी बातें बका करते थे फिर (जब हमारा अज़ाब आया) तो उनकी कारस्तानियाँ उनके कुछ भी काम न आई

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ

गरज़ उनके आमाल के बुरे नतीजे उन्हें भुगतने पड़े और उन (कुफ़ारे मक्का) में से जिन लोगों ने नाफरमानियाँ की हैं उन्हें भी अपने अपने आमाल की सज़ाएँ भुगतनी पड़ेंगी और ये लोग (खुदा को) े आजिज़ नहीं कर सकते

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا ۖ أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۖ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَاتٍ ۖ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

क्या उन लोगों को इतनी बात भी मालूम नहीं कि खुदा ही जिसके लिए चाहता है रोज़ी फराख़ करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग करता है इसमें शक़ नहीं कि क्या इसमें ईमानदार लोगों के (कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं

ۚ قُلْ يُعْبَادِي الَّذِينَ أُسْرِفُوا ۖ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا ۖ ۚ مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۖ ۚ إِنَّهُ ۖ ۚ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे (ईमानदार) बन्दों जिन्होने (गुनाह करके) अपनी जानों पर ज्यादतियाँ की हैं तुम लोग खुदा की रहमत से नाउम्मीद न होना बेशक़ खुदा (तुम्हारे) कुल गुनाहों को बख़्श देगा वह बेशक़ बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

54

وَأَنْبِئُوا[؟] إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا[؟] لَهُ[؟] مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ

और अपने परवरदिगार की तरफ रूजू करो और उसी के फरमाबरदार बन जाओ (मगर) उस वक्त के क़बल ही कि तुम पर जब अज़ाब आ नाज़िल हो (और) फिर तुम्हारी मदद न की जा सके

55

وَاتَّبِعُوا[؟] أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً[؟] وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ

और जो जो अच्छी बातें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुई हैं उन पर चलो (मगर) उसके क़बल कि तुम पर एक बारगी अज़ाब नाज़िल हो और तुमको उसकी ख़बर भी न हो

56

أَنْ تَقُولَ نَفْسُ[؟] يُحَسِّرَتْنِي عَلَىٰ مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ[؟] اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السَّخِرِينَ

(कहीं ऐसा न हो कि) (तुममें से) कोई शख्स कहने लगे कि हाए अफ़सोस मेरी इस कोताही पर जो मैंने खुदा (की बारगाह) का तक्ररुब हासिल करने में की और मैं तो बस उन बातों पर हँसता ही रहा

57

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ

या ये कहने लगे कि अगर खुदा मेरी हिदायत करता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता

58

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَىٰ الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً[؟] فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

या जब अज़ाब को (आते) देखें तो कहने लगे कि काश मुझे (दुनिया में) फिर दोबारा जाना मिले तो मैं नेकी कारों में हो जाऊँ

59

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ ءَايَتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكُفَرِينَ

उस वक्त खुदा कहेगा (हाँ) हाँ तेरे पास मेरी आयतें पहुँची तो तूने उन्हें झुठलाया और शेखी कर बैठा और तू भी काफ़िरो में से था (अब तेरी एक न सुनी जाएगी)

60

وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا ۚ عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ

और जिन लोगों ने खुदा पर झूठे बोहतान बाँधे - तुम क़यामत के दिन देखोगे उनके चेहरे सियाह होंगे क्या गुरुर करने वालों का ठिकाना जहन्नुम में नहीं है (ज़रूर है)

61

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

और जो लोग परहेज़गार हैं खुदा उन्हें उनकी कामयाबी (और सआदत) के सबब निजात देगा कि उन्हें तकलीफ छुएगी भी नहीं और न यह लोग (किसी तरह) रंजीदा दिल होंगे

62

اللَّهُ خَلِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۚ

खुदा ही हर चीज़ का जानने वाला है और वही हर चीज़ का निगेहबान है

63

لَهُ ۥ مَقَالِيدُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ

सारे आसमान व ज़मीन की कुन्जियाँ उसके पास है और जो लोग उसकी आयतों से इन्कार कर बैठें वही घाटे में रहेंगे

64

قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونَنِي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि नादानों भला तुम मुझसे ये कहते हो कि मैं खुदा के सिवा किसी दूसरे की इबादत करूँ

65

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

और (ऐ रसूल) तुम्हारी तरफ और उन (पैगम्बरों) की तरफ जो तुमसे पहले हो चुके हैं यक़ीनन ये वही भेजी जा की है कि अगर (कहीं) शिर्क किया तो यक़ीनन तुम्हारे सारे अमल अकारत हो जाएँगे और तुम तो ज़रूर घाटे में आ जाओगे

بَلِ اللّٰهُ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ

बल्कि तुम खुदा ही कि इबादत करो और शुक्र गुज़ारों में हो

وَمَا قَدَرُواْ اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهِۦ ۚ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا ۚ قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ
مَطْوِيّٰتٌ ۚ بِيَمِيْنِهِۦ ۚ سُبْحٰنَهُ ۚ وَتَعَلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ

और उन लोगों ने खुदा की जैसी कद्र दानी करनी चाहिए थी उसकी (कुछ भी) कद्र न की हालाँकि (वह ऐसा कादिर है कि) क़यामत के दिन सारी ज़मीन (गोया) उसकी मुट्ठी में होगी और सारे आसमान (गोया) उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए हैं जिसे ये लोग उसका शरीक बनाते हैं वह उससे पाकीज़ा और बरतर है

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاءَ اللّٰهُ ۚ ثُمَّ
نُفِخَ فِيْهِ اٰخَرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ ۚ يَنْظُرُوْنَ

और जब (पहली बार) सूर फूँका जाएगा तो जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं (मौत से) बेहोश होकर गिर पड़ेंगे) मगर (हाँ) जिस को खुदा चाहे वह अलबत्ता बच जाएगा) फिर जब दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फौन सब के सब खड़े हो कर देखने लगेंगे

وَأَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِاِءَ بِالنَّبِيِّ ۚ نَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ

और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी और (आमाल की) किताब (लोगों के सामने) रख दी जाएगी और पैगम्बर और गवाह ला हाज़िर किए जाएँगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर (ज़रा बराबर) ज़ुल्म नहीं किया जाएगा

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ ۚ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ

और जिस शख्स ने जैसा किया हो उसे उसका पूरा पूरा बदला मिल जाएगा, और जो कुछ ये लोग करते हैं वह उससे खूब वाकिफ है

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ ۞ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَتَحَتْ أَبْوُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ ۚ مِّنْكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا ۚ بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ

और जो लोग काफिर थे उनके गोल के गोल जहन्नुम की तरफ हँकाए जाएँगे और यहाँ तक की जब जहन्नुम के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाजे खोल दिए जाएँगे और उसके दरवाजा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम लोगों में के पैगम्बर तुम्हारे पास नहीं आए थे जो तुमको तुम्हारे परवरदिगार की आयतें पढ़कर सुनाते और तुमको इस रोज़ (बद) के पेश आने से डराते वह लोग जवाब देंगे कि हाँ (आए तो थे) मगर (हमने न माना) और अज़ाब का हुक्म काफिरों के बारे में पूरा हो कर रहेगा

قِيلَ ادْخُلُوا ۚ أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ

(तब उनसे) कहा जाएगा कि जहन्नुम के दरवाज़ों में धँसो और हमेशा इसी में रहो गरज़ तकबुर करने वाले का (भी) क्या बुरा ठिकाना है

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۚ ۞ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلِّمْ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ

और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे वह गिर्दों गिर्दा (गिरोह गिरोह) बेहिश्त की तरफ़ (एजाज़ व इकराम से) बुलाए जाएँगे यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचेंगे और बेहिश्त के दरवाजे खोल दिये जाएँगे और उसके निगेहबान उन से कहेंगे सलाम अलैकुम तुम अच्छे रहे, तुम बेहिश्त में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ

وَقَالُوا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَهُ ۚ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۚ ۞ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ

और ये लोग कहेंगे खुदा का शुक्र जिसने अपना वायदा हमसे सच्चा कर दिखाया और हमें (बेहिश्त की) सरज़मीन का मालिक बनाया कि हम बेहिश्त में जहाँ चाहें रहें तो नेक चलन वालों की भी क्या खूब (खरी) मज़दूरी है

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और (उस दिन) फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्दा गिर्द घेरे हुए डटे होंगे और अपने परवरदिगार की तारीफ की (तसबीह) कर रहे होंगे और लोगों के दरमियान ठीक फैसला कर दिया जाएगा और (हर तरफ से यही) सदा बुलन्द होगी अल्हमदो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन